ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(1): 13-15
www.allresearchjournal.com
Received: 08-11-2022
Accepted: 13-12-2022

राम सोगारथ यादव
सूय वरीय शोध प्रज्ञ, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

Corresponding Author:
राम सोगारथ यादव
सूय वरीय शोध प्रज्ञ, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

"भोट" उपन्यासक वैशिष्ट्य

राम सोगारथ यादव

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2023.v9.i2a.10550

सारांश
'भोट' उपन्यासक लेखक मैथिली साहित्यक साहित्यकार सुभाष चन्द्र यादव छथि। हिनक मैथिली भाषामे तीन टा उपन्यास प्रकाशित भऽ चुकल छैन्हि। हिनक रचनाक विशेष महत्त्व एकर विषय-वस्तु एवं भाषा शैलीक अधिक रहैत छैन्हि। एहि आलेखक अन्तर्गत भोट उपन्यासक विभिन्न विशेषताक अवलोकन कएल गेल अछि। 'भोट' उपन्यासक सेहो भाषाशैली अपन विशेष महत्त्व रखैत अछि। भोट उपन्यास राजनीति विषय-वस्तु पर लिखल गेल अछि। एहि उपन्यासक पाठसँ पाठक कें राजनीतिक वातावरणक अनेक ज्ञान भऽ सकैत छैन्हि।

कूटशब्द: 'भोट' उपन्यासक विषय-वस्तुक संग कथानक, कथोपकथन, चरित्र-चित्रण, वातावरण, उद्देश्य एवं भाषा शैलीक अध्ययन एवं अवलोकन

प्रस्तावना
"भोट" उपन्यासक लेखक सुभाष चन्द्र यादव छथि। एहि उपन्यासक प्रकाशन 2022 ई० मे किसुन संकल्प लोक प्रकाशनसँ भेल अछि। "भोट" उपन्यास एकटा लघु उपन्यास अछि जे मात्र 68 पृष्ठमे लिखल गेल अछि। ई उपन्यास छोट रहितो अपन विषयवस्तु, कथोप–कथन, चरित्र–चित्रण, वातावरण, भाषाशैली एवं उद्देश्य पर सफल अछि। एहि उपन्यासक भाषाशैलीक विशेष महत्त्व अछि। भोट उपन्याससँ पूर्व हिनक दू टा कथा संग्रह 'घरदेखिया' (1983) एवं 'बनैत बिगड़ैत' (2009), दू टा उपन्यास 'गुलो' (2015) एवं 'मडर' (2021), यात्रा साहित्यक 'रमता जोगी' (2019) आदि रचना सभ विषेश चर्चित एवं प्रशंसित भेल अछि।

"भोट" उपन्यास राजनीतिक एकटा नीक विषय–वस्तु कें लऽ कए लिखल गेल अछि। एहि उपन्यासमे बिहारक विधानसभा चुनावक चर्चा अछि। महागठबंधनमे कोना राजद, कांग्रेस एवं जदयूक कार्यकर्ता सभ असमंजसमे परल अछि। कोना भोटर सभ लग एक–दोसर अपन–अपन उम्मीदवारक चर्चा करैत अछि। महिला भोटर सभके कोना बुझबैत छथि जे लालू–नीतीश मिल गेलइ–ए। महिला भोटर सभ नीतीश कुमार कें भोट देत से ओ सभ कहैत अछि। कारण शराबबंदी, महिला आरक्षण, छात्रवृति एवं महिला सभक लेल अनेक योजनाक प्रारंभ कैने अछि। आब भोट जाइत–धर्मक आधार पर होइत छैक। जाहि क्षेत्रमे जे जाइत अधिक रहल ओकर जीतैक अधिक उम्मीद रहल।

"भोट" उपन्यासमे सुपौल जीलाक पिपरा विधान सभा क्षेत्रक कथा छैक। एहि बेर महागठबंधनमे पिपरा विधानसभा क्षेत्र राजद कें हिस्सामे पड़ल छै। राजदक उम्मीदवार यदुवंश अछि। एतय सभ बेर विजेनदर यादव जीतैत रहइ। जें जदयूक उम्मीदवार छल। तैं एतय बेसी भोटर जदयूक अछि। यदुवंश करिहो के कुछ मुहगर लोक कें जे नेता सभ अछि तकरा माध्यमसँ प्रचार करैत अछि। राजिनदर एहिमे प्रमुख नेता छिऐ। राजिनदर मुखियाक चुनाव लड़ल छल मुदा जीत नहि सकल। राजिनदर चंदेसरी कें फोन करैत अछि। चंदेसरी कोनो आर आदमी कें अहिना करैत–करैत आठ–दस आदमी मिल कऽ प्रचारमे घुमैत अछि।

आइ–कल्हि चुनाव लड़ब बिना टाका–रुपया कें संभव नहि अछि। कियो कतेको प्रसिद्ध आ समाज सेवी किएक नहि रहौक लोक कामपर भोट नहि दैत छै। आइ–काल्हि भोट जाइत–धर्म आ रुपया पर होइत अछि। मुदा यदुवंश सभसँ कहैत अछि जे हमरा पैसा नहि अछि। जाहिसँ उपन्यासकार चिंतित छथि आ ओ कहैत छथि–

"बिना पैसा कें चुनाव केना लड़त? आइ–काइल्ह तए चुनाव पैसा के खेल छिऐ। पैसा उझैल दिऔ आ भोट कीन लिअ। की ई बात यदुवंश नै बुझइ ए?" [1]

अर्थात भोटर सभ अपन मतकेँ दान नहि करैत छथि बेचैत छथि। कर्मठ एवं योग्य प्रतिनिधि केँ नहि चुनैत अछि। चाहे केहनो भ्रष्ट नेता रहौ जे रुपया छिटत वैह जीतत।

कामता जदयूक प्रमुख नेता अछि। कामता, यदुवंश आ सुभाषजी समान वयस्कक अछि। सभ संगहि पढ़ने अछि। मुदा यदुवंश राजदक उम्मीदवार अछि। राजदक मीटिंग हरदीमे छै। मुदा कामता दुविधामे अछि जे जाई की नहि। ओकरा कोनो सूचना नहि भेटल छै। महागठबंधन केँ शीर्ष नेता तऽ मंचपर संगहि प्रचार करैत अछि। मुदा ग्राउंड परहक कार्यकर्तामे एखनो मतभिन्नता छै। एहि तरहक अलगाव बोध गठबंधन केँ कमजोर करैत छै। एहि पर उपन्यासकारक विचार एहि प्रकारे अछि–

"हमरा बुझाइत रहइए जे पाटी के बीच के अलगाव बोध महागठबंधन केँ पहिल गंभीर संकट छिऐ। पाटी के बीच ऐकता कायम करब प्रचार अभियान केँ पहिल लक्ष्य होना चाही।" [2]

कामता केँ पाटीमे एकटा विशेष छवि छै ओ निष्ठावान आ समर्पित किर्यकर्ता छै। मीटिंग, धरना, प्रदर्शन, जुलूस, समारोह, सम्मेलन सभमे ओ उत्साह आ तत्परता संग भाग लैयत अछि। जखन कामता यदुवंशसँ मिलैत अछि तऽ पुरान गप सभ याद कऽ कए घनिष्टता बढबैत अछि।

दोसर पाटी बीजेपीक उम्मीदवार विश्वमोहन छिऐ। विश्वमोहन एक बेर एमपी भेल रहै। दोसर बेर हाइर गेल। वर्तमानमे ओकर कनियाँ सुजाता एतौका एमेले छलै। आब ओ अपने ठाढ भेल अछि। विश्वमोहन धनवान अछि आ ओ भोट कीन सकैत अछि। ओकारा जाइतक आधार पर सेहो भोट हेतए कारण ओ कीयट अछि आ एहि क्षेत्रमे कीयटक जनसंख्या बेसी छै।

सत्यनारायण गुप्ता समाजवादी पाटीक उम्मीदवार अछि। तेली सभ बेसी भोट सत्यनारायणेक देतैक कारण ईहो तेली अछि।

सभसँ कमजोर उम्मीदवार वामपंथी पाटीक नागेसर यादव अछि। ओकर कोनो चर्चा नहि छै। ओ यदुवंशक भोट काटत सैह टा।

आइ–काल्हि जतेक उम्मीदवार अछि सभ अपन स्वार्थक लेल चुनाव लरैत अछि। जीतवाक लेल पाई छिटलक आ जीतलाक बाद फेर लूटलक। समाज सेवा आ कल्याणक उद्देश्य किनको नहि रहैत छै। नेतो सभ करतै कि भोटर सभ जे पाई नहि देतैक तऽ ऊ भोट किनको आर के दऽ देतैक। कोनो चुनाव चाहे पंचायत, एमेले, एमपीक रहौ भोटरो सभ केँ खर्चा चाहि। एहि पर उपन्यासकारक कहब अछि जे–

"मन्नू भाय, पहिने चुनाव कते चिक्कन आ शांत होइत रहइ। आपसमे कते प्रेम आ भैचारी रहइ। तहिया लोगक भलाई आ कल्याण लए चुनाव होइ आब अप्पन विकास लए होइ छै। पहिने आदर्शकेँ लड़ाइ रहइ। आब स्वार्थ के उठापटक छै।"

आइ–काल्हि भोटक नियम बदल गेलइ। आब एक–एकटा दुआर पर एक–एकटा भोटरसँ भेट करऽ परैत छै। जऽ किनको दुआर पर गेलाउ आ हुनक पड़ोसीक दुआर पर नहि गेलि तऽ ओ अहॉक विरोधी भऽ जाएत। लोक आब पूछ लेए मरैत अछि। एकरा होइ छै जे हमरो पुछलक आ हमरो चिन्है अछि। एहि संबंधमे सुभाषजीक कहब अछि जे–

"चुनाव के जे एगो पवित्र नियम छै, से ई जे अहाँ सब भोटर के दुआर पर जाउ। भेट हो या नै हो, भोटर कए बुझाय जाइ छै जे हमरो मोजर देलक। हमरो भेलू देलक।"[4]

एहि उपन्यासमे सरकारक विभिन्न योजना सभक सेहो चर्चा अछि। जेनाकृ सात निश्चय, एक्केस सूत्री कार्यक्रम, इंद्ररा आवास, महिलाक आरक्षण, साइकिल–पोशाक योजना आदि। एहिसँ पाठकके सरकारक योजनाक सेहो ज्ञान प्राप्त हेतैक।

सफीना एहि उपन्यासक एकटा महिला पात्र अछि। पछिला पंचायत चुनावमे मुखियामे ठाढ भेल छल। मुदा दोसर स्थान पर रहल। ओ विशेष हिंदी बजैत अछि। ओ बाजैमे बहुत तेज अछि ओकरा सँ बाजैमे कोय टिकत नहि। दीना पाठक सेहो मुखियाक उम्मीदवार छल। एक दिन ओ सफीनासँ कहैत अछि जे तों लड़की भऽ कऽ कियैक चुनाव लड़ैत छए। एहि समय दीना पाठक आ सफीनामे किछु कहाँ सुनि होइत अछि। ताही पर सफीना दीना पाठक सँ कि कहैत अछि से देखु–

"डींग मत हॉकिए। पान का लेर तो सम्हरबे नइ करता है, कुरता पर चुआते है और चले पंचायत सम्हारने।"[5]

एहि उपन्यासमे सफीनाक माध्यमसँ लेखक महिला शस्कतीकरण केँ सेहो प्रस्तुत कएने छथि।

"भोट" उपन्यासमे लेखक पात्रक कथोप–कथन के सेहो सुन्दर ढंगे प्रस्तुत कएने छथि। जे पात्र जेहन छथि हुनक भाषा शैली एहि रूपे प्रस्तुत कएने छथि। जेना किछु पात्रक वार्तालापक भाषा शैली देखल जाऊ–

"सफीना पुछलकैकृ बाबा, क्या हुआ?
नत्थू कुहरैत बाजलैकृ बोखार लाइग गिया।
सफीनाकृ ऐ बाबा, आइए तो।
बाबा, घर चैल जाइएगा कि पहुँचा दें?
नत्थु बाजलकृ नै, नै। हम असगरे चैल जाएगा।"[6]

सफीना मुस्लिम अछि आ ओ दिल्लीमे सेहो रहैत अछि, तैं ओ हिन्दी बजैत अछि। मुदा सफीना मैथिली बाजब जनैत अछि। एकर हिन्दीमे मैथिली फेटल रहैत अछि।

एहि उपन्यासमे जे पात्र जेहन छै ओ ओहिना बाजैत अछि। चाह–पानक दोकान बला, दारू पियाक, नेता आदिक अपन–अपन योग्यताक अनुसार कथोपकथन प्रस्तुत करैत छथि। एक जगह चाइर–पांच गोटय बैठल छै। ओ सभ चुनाव पर गप कए रहल अछि। ऐकरा सभहक वार्तालापक शैली देखु–

"तेसर कहै छैकृ एते साल सए कांगरेस राज केलकै, मंदिर बनाय भेलै? राम मंदिर तए बीजेपीए बनेतै। और ककरो बुतय नै हेतै।

चारिम आदमी कहै छैकृ रौ, लोग जे सरकार चुनलकै से मंदिरे बनबै लए? सरकार लोग लए काम करतै कि मंदिर लए?

पॉचम आदमी कहै छैकृ ठीक कहै छहक। सरकार लोगक जिनगी सुधारै लए बनलइए। मंदिर के नाम पर चंदा खाइ लए नै।"[7]

"भोट" उपन्यासमे लेखक पात्रक चरित्र–चित्रण सेहो खुब निक जका केने छथि। पाठक केँ ई उपन्यास पढलासँ पात्रक जीवन्त रूप मनमे चित्रित भऽ जाइत अछि। पात्रक चरित्र–चित्रणसँ पात्रक रूप आँखिक सोझा जेना प्रत्यक्ष रूपे प्रस्तुत भऽ जाइत अछि। सफीनाक चरित्र–चित्रण लेखकक शब्दमे देखु–

"ओकर केश हवा मे उड़ैत रहइ। खन मुँह कए झाँइप लै, खन उघाइर दै। अन्हार–इजोत के अइ खेल मे सफीना कोनो मायावी सुंदरी सन देखाइ। ओकर काया रेशम जकाँ चिक्कन आ मोलायम रहइ। एक बेर देह छुबाय गेलै से चंदेसरी कए लागलै जेना बरफ छुइब लेने हो। साँप सन ठंडा। ओकर चीरल–चीरल चंचल आँइख, लचलच करैत पातर डॉड़ चंदेसरी कए मोहि लेलकै।"[8]

एहि तरहे उपन्यासकार आनो–आन पात्र जेना चंदेसरी, कामता, यदुवंश, मन्नू, सुजाता, बिंदु, विजेन्द्र, विश्वमोहन, सत्यनारायण, नागेसर आदिक सजीव चरित्र–चित्रण कएने छथि। मन्नूक चरित्र–चित्रण उपन्यासकार केहन सजीवताक संग कएने छथि देखु–

"मन्नू दुब्बर–पातर आ भुटाइर छै। लेकिन पैनगर खूब।..... ओकर नजैरियो बड़ तेज छै। चौकन्ना रहए–ए। के एलइ, कए गेलइ, के की बजलैदृ सब पर ओकर ध्यान रहै छै।"[9]

"भोट" उपन्यासक वातावरण एवं देशकालक निर्माण बहुत नीकसँ कएल गेल छैक। उपन्यासकार एहि उपन्यासमे कोनो घटना के प्रस्तूत करैसँ पूर्व घटनासँ संबंधित महौलक निर्माण करैत छथि। उपन्यासकारक कर्त्तव्य अछि जँ ओ उपन्यासमे जाहि देशकाल आ वातावरण केँ प्रस्तूत कए रहल छथि ताहि वातावरणक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आ राजनीतिक विवेककेँ प्रस्तूत

करैथ। एहि तत्व सभक प्रयोग यादवजी भोट उपन्यासमे बहुत नीकसँ कएने छथि।

शैली कोनो व्यक्तिक बजबा वा लिखबाक तकनीक कँ कहल जाएत अछ। एकहि व्यक्तिक शैली देशकाल आ परिस्थितिक अनुसार अगल–अलग भऽ सकैत छैक। लेखकक शैली पर लेखकक रूचि, संस्कार एवं वातावरणक पूर्ण प्रभाव पड़व स्वाभाविक अछि। भाषाशैलीक आधार पर कोनो लेखकक रचना कँ चिन्हल जाए सकैत अछि। उपरोक्त सभ भाषाशैलीक गुण उपन्यासकार यादवजीक रचनामे भेटैत अछि। 'भोट' उपन्यासक भाषा शैलीक विशेष महत्त्व अछि। एहि उपन्यासमे प्रयोग किछु शब्द सभ जेनाकृ 'तऽ', 'कऽ', 'भऽ', 'सँ', 'रहै', 'दिए' आदि शब्द सभक जगह क्रमशः 'तए', 'कए', 'भाए', 'सए', 'रहइ', 'दिअइ' कँ प्रयोग हुनक भाषा शैलीक आँन–आँन लेखक सँ भिन्न करैत अछि।

भोट" उपन्यास एकटा राजनीतिक उपन्यास अछि। एहि उपन्यासक माध्यमसँ लेखक सरकारक विभिन्न योजनासँ सेहो परिचय करैने छथि। एहि उपन्यासक अध्ययनसँ पाठक लोकनि कँ राजनीतिक एवं चुनाव प्रचारक ज्ञान अवश्य हेतैक। एहि उपन्यासमे चुनाव प्रचारक विभिन्न तरिकाक वर्णन कएल गेल अछि। गठबंधनमे एक–दोसर पाटीक कार्यकर्ताक की नैतिका छै जाहिसँ गठबंधन आर मजबूत हेतैक एहि बातक सेहो नीक वर्णन अछि। एहि उपन्यासक माध्यमसँ लेखक उम्मीदवार एवं भोटर दुनू कँ चुनावक नैतिकताक संदेश देने छथि।

अतः एहि उपन्यासक उद्देश्य सेहो स्पष्ट अछि। ई उपन्यास लघु अछि मुदा उच्च कोटिक उपन्यास अछि।

संदर्भः

1. यादव, सुभाष चन्द्र. भोट. किसुन संकल्प लोक, सुपौल, बिहार, 2022, पृ०–13.
2. तत्रैव, पृ०–12.
3. तत्रैव, पृ०–35.
4. तत्रैव, पृ०–37.
5. तत्रैव, पृ०–43–44.
6. तत्रैव, पृ०–42–43.
7. तत्रैव, पृ०–63.
8. तत्रैव, पृ०–58.
9. तत्रैव, पृ०–34.